भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला
खड़कवासला , पुणे - 411024

जल अनुसंधान
त्रैमासिक समाचार

संपादक मंडल:

1. डॉ. आर. एस. काँकरा, निदेशक - मुख्य संपादक
2. श्री विशाल दिलीप दोंड, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी - संपादक
3. श्री विकास कुमार शुक्ला, वैज्ञानिक "डी" - सदस्य
4. कुमारी माधवी गजरे, वैज्ञानिक "बी" - सदस्य
5. श्रीमती अनामिका साहा, सहायक अनुसंधान अधिकारी - सदस्य

संकलन एवं प्रकाशन: केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, खड़कवासला, पुणे

वेबसाइट :www.cwprs.gov.in दूरध्वनि : 020-2410 3200, 2410 3233 फैक्स : 020 24381004 ईमेल- : director@cwprs.gov.in

विषय सूची

- 8वें ‘इंडिया वाटर वीक’ में केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा जलविज्ञान और जल संसाधन प्रबंधन में अपनी विशेषज्ञता का प्रदर्शन
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला में 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान की शुरुआत
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने 8वें ‘इंडिया वाटर वीक-2024’ में “बेस्ट एक्सहिबिटर अवार्ड” से सम्मानित
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा पुणे के वेंकटेश्वरा स्कूल में जल संरक्षण पर जागरूकता अभियान का आयोजन, पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति छात्रों को प्रेरणा
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा 26-27 सितंबर 2024 को भूटान के खोलोंगचू हाइड्रो पावर लिमिटेड और ड्रुक ग्रीन पावर कॉर्पोरेशन प्रतिनिधिमंडल के साथ उच्च-स्तरीय बैठक
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा 2 अक्टूबर को विशेष अभियान 4.0 की शुरुआत
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों द्वारा ICOLD204 सम्मेलन में क्रांतिकारी अनुसंधान की प्रस्तुति
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला में नौसेना सैनिक छात्रों का दौरा
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों और MMB अधिकारियों का मंडवा RO-RO टर्मिनल दौरा
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला में "संख्यात्मक सिमुलेशन प्रयोगशाला" का उद्घाटन
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला का जल संरक्षण पर जन जागरूकता अभियान
- “क्लाइमेट हैजार्ड्स और क्लाइमेट रेजिलियंट कोस्टल स्ट्रक्चर्स” कार्यशाला का उद्घाटन
- मर्गुनी बैराज बाँध स्थल का निरीक्षण और गणितीय प्रतिमान अध्ययन
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों का मणुगुरु जल संयंत्र और सितममसागर बैराज बाँध का निरीक्षण
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा “सतर्कता जागरूकता सप्ताह” का आयोजन
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला “सी.आई.आई. अवार्ड फॉर एक्सीलेंस इन वूमन इन STEM 2024” से सम्मानित
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा टुर्गा ऊर्जा संग्रहण परियोजना के लिए जलीय प्रतिमान अध्ययन पर उच्च-स्तरीय बैठक
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा “जल संसाधन प्रबंधन और संरक्षण – STEM में महिलाओं के लिए कार्यशाला”
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा HYDRO 2024 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन पर संबोधन
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे में HYDRO 2024 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन
- केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की गतिविधियों और उपलब्धियों की मुख्य विशेषताएं
- तकनीकी अनुसंधान रिपोर्ट
- सेवा-निवृत्तियों की सूची
- नई नियुक्तियों की सूची

संदेश

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के तिमाही बुलेटिन के इस चौथे संस्करण में आपका स्वागत है। यह रिपोर्ट हमें एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है, ताकि हम पिछले कुछ महीनों में प्राप्त महत्वपूर्ण उपलब्धियों और भविष्य की दिशा के बारे में की जा रही पहल को आपके साथ साझा कर सकें।

इस तिमाही में, हमारे संस्थान ने कई महत्वपूर्ण मील के पत्थर पार किए हैं। हमारे वैज्ञानिकों और अभियंताओं ने जल संसाधन प्रबंधन, नदी-नहर सुधार और विद्युत उत्पादन में नई तकनीकी ऊँचाइयों को छूने के लिए निरंतर प्रयास किया है। इसी दौरान, हमारी संस्थान ने 8वें ‘इंडिया वाटर वीक-2024’ में जलविज्ञान और जल संसाधन प्रबंधन में अपनी विशेषज्ञता का शानदार प्रदर्शन किया, साथ ही “बेस्ट एक्सहिबिटर अवार्ड” भी जीता। इसके अलावा, पुणे के वेंकटेश्वरा स्कूल में जल संरक्षण पर जागरूकता अभियान आयोजित कर, छात्रों को पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति प्रेरित किया।

हमारी टीम की मेहनत और समर्पण ने हमें उच्च स्तर की सफलता दिलाई है। उदाहरण स्वरूप, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान की शुरुआत की, जिससे पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई। साथ ही, हमने भूटान के **खोलोंगचू हाइड्रो पावर लिमिटेड और ड्रुक ग्रीन पावर कॉर्पोरेशन** प्रतिनिधिमंडल के साथ उच्च-स्तरीय बैठक आयोजित की और अपनी जलविज्ञान व जल संसाधन से जुड़ी पहल को और मजबूत किया।

हमारे वैज्ञानिकों ने “बड़े बांधों पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग 2024” सम्मेलन में अपने क्रांतिकारी शोध प्रस्तुत किए और इस दौरान केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला को "सी.आई.आई. अवार्ड फॉर एक्सीलेंस इन वूमन इन STEM 2024" से भी सम्मानित किया गया। हमारी संस्थान ने टुर्गा ऊर्जा संग्रहण परियोजना के लिए जलीय प्रतिमान अध्ययन पर उच्च-स्तरीय बैठक आयोजित की और HYDRO 2024 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी आयोजन किया व सफलतापूर्वक संचालित किया।

आगे की दिशा में, हम अपने अनुसंधान और विकास को और अधिक प्रासंगिक और प्रभावशाली बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम निरंतर नए विचारों और नवाचारों को प्रोत्साहित करेंगे ताकि हम जल और ऊर्जा क्षेत्र में वैश्विक मानकों को बनाए रख सकें।

आप सभी की निरंतर मेहनत, समर्पण और उत्साह के लिए एक बार फिर से धन्यवाद। हम सभी मिलकर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि हम अपने सामूहिक प्रयासों से नई ऊँचाइयों तक पहुंचेंगे और महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त करेंगे।

डॉ . आर.एस. काँकरा
निदेशक

8वें 'इंडिया वाटर वीक' में केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा जलविज्ञान और जल संसाधन प्रबंधन में अपनी विशेषज्ञता का प्रदर्शन

जल शक्ति मंत्रालय ने 17-20 सितंबर 2024 के बीच भारत मंडपम, नई दिल्ली में 8वीं इंडिया वाटर वीक का आयोजन किया । केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने प्रदर्शनी स्टॉल के माध्यम से जलविज्ञान और जल संसाधन प्रबंधन में अपनी विविध विशेषज्ञता को प्रदर्शित करने वाले कई प्रतिमान प्रस्तुत किए । प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री सी. आर. पाटिल, माननीय केंद्रीय जल शक्ति मंत्री द्वारा किया । डॉ. राज भूषण चौधरी, राज्य मंत्री ने केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के स्टॉल का दौरा किया। डॉ. आर. एस. काँकरा, निदेशक, अनुसंधान शाला ने माननीय मंत्री का स्वागत किया और विभिन्न प्रदर्शन प्रतिमान और केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की विशेषज्ञता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अनुसंधान शाला का स्टॉल तकनीकी विशेषज्ञों, हितधारकों और आम जनता सहित कई गणमान्य व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित करने में सफल रहा। प्रदर्शित प्रतिमान ने दिलचस्प चर्चाओं को जन्म दिया, जो केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की जलविज्ञान और जल संसाधन प्रबंधन में विशेषज्ञता और योगदान को दर्शाते हैं।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला में 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान की शुरुआत

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला में 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2024 तक "स्वच्छता ही सेवा" अभियान चलाया गया। अभियान की शुरुआत 17 सितंबर 2024 को हुई। इस अभियान की शुरुआत एक सामूहिक शपथ से हुई, जिसका नेतृत्व डॉ. प्रभात चंद्र, अतिरिक्त निदेशक ने किया। इस शपथ का उद्देश्य कर्मचारियों और समुदाय के बीच स्वच्छता और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को बढ़ावा देना था। अभियान के दौरान कई गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिनमें प्रमुख रूप से केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला परिसर में पौधारोपण और कर्मचारियों द्वारा वॉकथॉन का आयोजन शामिल था। पौधारोपण से स्थान के पर्यावरणीय योगदान को बढ़ावा मिला, जबकि वॉकथॉन ने स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने में मदद की। यह पहल केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। इस अभियान के माध्यम से केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने स्वच्छता के महत्व को रेखांकित किया और यह संदेश दिया कि पर्यावरण का संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी है । 18 सितंबर 2024 को, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने "स्वच्छता ही सेवा" पहल को जारी रखते हुए अपने वैज्ञानिकों और कर्मचारियों से उत्साही भागीदारी प्राप्त की। विभिन्न टीमों ने मिलकर स्वच्छता अभियानों में भाग लिया, जिनका उद्देश्य परिसर की स्वच्छता और सौंदर्य को बढ़ाना था। इसके साथ ही, स्वास्थ्य इकाई ने दैनिक वेतन और अस्थायी श्रमिकों के लिए चिकित्सा जांच का आयोजन किया जिससे स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी और रोकथाम आधारित स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा मिला। इस पहल ने सामुदायिक भावना को बढ़ावा दिया, जिसमें एक साफ वातावरण के साथ-साथ कर्मचारियों की भलाई को भी प्राथमिकता दी गई।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान में वितरित किए 2000 पौधे

"एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के तहत, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के निदेशक डॉ. आर. एस. काँकरा ने विभिन्न केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के विभिन्न विभागों में पौधारोपण के लिए 2000 पौधे वितरित किए। यह पहल अनुसंधान शाला की प्रकृति के प्रति प्रतिबद्धता और निरंतरता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। इस अभियान के माध्यम से अनुसंधान शाला पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र को बढ़ावा देने की दिशा में योगदान दे रहा है। पौधों के वितरण और रोपण की प्रक्रिया की एक झलकी यहाँ प्रस्तुत की गई हैं, जो इस पहल की सफलता और अनुसंधान शाला द्वारा प्रकृति की देखभाल के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला 8वें 'इंडिया वाटर वीक-2024' में "बेस्ट एक्सहिबिटर अवार्ड" से सम्मानित

8वें इंडिया वाटर वीक (IWW)-2024 **का समापन** 19 **सितंबर** 2024 **को एक भव्य समापन समारोह के साथ हुआ। इस समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता जल शक्ति मंत्रालय के माननीय मंत्री श्री सी. आर. पाटिल ने की। समापन समारोह में राज्य मंत्री डॉ. राज भूषण चौधरी, सचिव** (DoWR, RD & GR), **और अन्य उच्च पदस्थ अधिकारी तथा गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। इस अवसर पर जल संसाधन, नदियों के संरक्षण, और जल प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया। समारोह के दौरान केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला को "सर्वोत्तम केंद्रीय मंत्रालय/संस्था पुरस्कार " से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार अनुसंधान शाला के उत्कृष्ट प्रदर्शनों और प्रदर्शनी में किए गए शानदार प्रदर्शनों के लिए दिया गया।** CWPRS **ने अपनी कार्यकुशलता और उच्चतम तकनीकी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के लिए विभिन्न प्रभावशाली प्रदर्शनों का आयोजन किया।** केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला **ने तीन कार्यशील टेबलटॉप प्रतिमान प्रस्तुत किए, जो जल संसाधन प्रबंधन और जलविज्ञान के कुछ अत्याधुनिक विचारों को दर्शाते थे। इनमें से प्रमुख थे:**

- **एकीकृत नदी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन** (Integrated River Basin Management) - **यह प्रतिमान नदी के पूरे जलग्रहण क्षेत्र के प्रबंधन की प्रक्रिया को दर्शाता था, जिसमें जल की खपत, संरक्षण और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को भी शामिल किया गया था।**
- **नहर स्वचालन** (Canal Automation) - **यह प्रतिमान नहरों की स्वचालित प्रणाली को दिखाता था, जो जल वितरण को अधिक प्रभावी और जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीला बनाता है।**
- **विशाखापट्टनम पोर्ट का लेआउट प्रतिमान - इस प्रतिमान ने विशाखापट्टनम पोर्ट के ढांचे और उसकी संरचनाओं का स्पष्ट और विस्तृत चित्रण किया, जो समागम के केंद्रीय विषयों के साथ मेल खाता था।**

इन प्रदर्शनों ने दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया और इसने कार्यक्रम के दौरान गहन चर्चाओं को जन्म दिया। इन प्रदर्शनों ने CWPRS **की जलविज्ञान, जल संसाधन प्रबंधन और बुनियादी ढांचे के विकास में अग्रणी भूमिका को दोबारा स्थापित किया। इस पुरस्कार ने यह प्रमाणित किया कि** CWPRS **न केवल अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में प्रमुख है, बल्कि जल संसाधन प्रबंधन, नदियों के संरक्षण और जलवायु परिवर्तन के समाधान में भी एक महत्वपूर्ण नेतृत्व निभा रहा है। इन प्रदर्शनों के माध्यम से** CWPRS **ने अपने योगदान को एक बार फिर से स्थापित किया और जलविज्ञान में अपनी विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया।**

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा पुणे के वेंकटेश्वरा स्कूल में जल संरक्षण पर जागरूकता अभियान का आयोजन, पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति छात्रों को प्रेरणा

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला (CWPRS) ने 27 सितंबर 2024 को पुणे के वेंकटेश्वरा स्कूल में जल संरक्षण पर आधारित एक महत्वपूर्ण जन जागरूकता अभियान आयोजित किया। यह कार्यक्रम CWPRS के सामुदायिक कार्यक्रम के तहत जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने और लोगों को इसके महत्व से अवगत कराने के उद्देश्य से था। कार्यक्रम की शुरुआत CWPRS के वैज्ञानिकों द्वारा एक जानकारीपूर्ण प्रस्तुति से हुई, जिसमें छात्रों को जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और भारत के जल संसाधनों की सुरक्षा में CWPRS की केंद्रीय भूमिका के बारे में बताया गया। वैज्ञानिकों ने जल संकट के बारे में गंभीरता से बात की और विद्यार्थियों को समझाया कि जल संरक्षण न केवल आज के लिए बल्कि भविष्य के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण छात्रों द्वारा जल संरक्षण पर बनाई गई पोस्टर प्रस्तुतियाँ और नवाचारपूर्ण प्रतिमान थे। इन प्रस्तुतियों में छात्रों ने अपनी रचनात्मकता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और जल संरक्षण से संबंधित विचारों को चित्रित किया। उनके प्रतिमान और पोस्टर्स में जल बचाने के विभिन्न उपायों को प्रभावी तरीके से दिखाया गया और उनकी भावनाएं और पर्यावरण के प्रति जागरूकता साफ तौर पर प्रदर्शित हुई। कार्यक्रम का समापन "एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत पौधारोपण कार्यक्रम के साथ हुआ, जिसमें छात्रों ने पेड़ लगाए। यह पहल पर्यावरणीय जिम्मेदारी और स्थिरता के प्रति छात्रों में एक मजबूत भावना को बढ़ावा देने के लिए थी। पौधारोपण के माध्यम से, CWPRS ने युवा पीढ़ी में पर्यावरणीय संरक्षण की भावना को प्रोत्साहित किया और उन्हें यह सिखाया कि हर एक व्यक्ति का योगदान एक हरे-भरे और स्थिर भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण होता है। इस तरह की पहल CWPRS की निरंतर कोशिश है, ताकि युवा पीढ़ी को स्थिर और स्थायी प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सके, जिससे हम सभी के लिए एक हरित, मजबूत और जलवायु परिवर्तन के लिए लचीला भविष्य सुनिश्चित किया जा सके।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा 26-27 सितंबर 2024 को भूटान के खोलोंगचू हाइड्रो पावर लिमिटेड और ड्रक ग्रीन पावर कॉर्पोरेशन प्रतिनिधिमंडल के साथ उच्च-स्तरीय बैठक

26-27 सितंबर 2024 को केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के निदेशक डॉ. आर. एस. काँकरा जी ने भूटान के खोलोंगचू हाइड्रो पावर लिमिटेड और ड्रक ग्रीन पावर कॉर्पोरेशन (DGPC) के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ एक उच्च-स्तरीय बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में भारतीय संस्थाओं जैसे जल एवं विद्युत परामर्श सेवाएँ (WAPCOS) और टाटा पावर के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। बैठक के दौरान, भूटानी प्रतिनिधि मंडल ने अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों से मुलाकात की, जो जलविद्युत परियोजनाओं में जटिल जलीय चुनौतियों का अध्ययन कर रहे हैं। इस दौरान, भूटानी प्रतिनिधि ने अनुसंधान शाला के मौजूदा भौतिक प्रतिमान का दौरा किया और जलविद्युत परियोजनाओं में जलीय प्रतिमान के महत्व को समझा। मुख्य चर्चा का केंद्र भूटान के 600 मेगावाट खोलोंगचू जलविद्युत परियोजना के लिए किए गए जलीय प्रतिमान अध्ययन पर था। इस परियोजना के लिए अनुसंधान शाला द्वारा किए गए प्रतिमान अध्ययन पर गहन विचार-विमर्श किया गया, ताकि जलविद्युत परियोजना की सफलता के लिए आवश्यक जलीय मानदंडों को सही तरीके से लागू किया जा सके। इसके अलावा, भविष्य में नए भौतिक प्रतिमान अध्ययन के लिए आगे सहयोग को लेकर भी चर्चा हुई। यह बैठक न केवल भूटान के जलविद्युत क्षेत्र में अनुसंधान शाला की विशेषज्ञता को साझा करने का एक अवसर था, बल्कि दोनों देशों के बीच जल संसाधन प्रबंधन और जलीय इंजीनियरिंग के क्षेत्र में और अधिक साझेदारी और सहयोग को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण कदम भी था। अनुसंधान शाला द्वारा भूटान के जलीय प्रतिमान के अध्ययन में दिया गया समर्थन दोनों देशों के बीच तकनीकी सहयोग को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा 2 अक्टूबर 2024 को विशेष अभियान 4.0 की शुरुआत

2 अक्टूबर 2024 को केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने विशेष अभियान 4.0 की शुरुआत की, जो स्वच्छता और पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को व्यक्त करता है। इस अभियान की शुरुआत निदेशक द्वारा "स्वच्छता शपथ" के साथ की गई, जिसमें सभी कर्मचारियों ने स्वच्छता और साफ-सफाई के प्रति अपने योगदान का वचन लिया। इसके बाद, एक श्रमदान अभियान आयोजित किया गया, जिसमें कर्मचारियों ने अनुसंधान शाला परिसर और मुठा नहर की सफाई की। इस गतिविधि का उद्देश्य न केवल परिसर को साफ रखना था, बल्कि नदियों और जल संसाधनों की सफाई और संरक्षण की आवश्यकता पर भी जोर देना था। इसके साथ ही, "एक पेड़ मा के नाम" अभियान के तहत पौधारोपण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इस पहल के माध्यम से, कर्मचारियों और समुदाय को पर्यावरण संरक्षण और हरित वातावरण के महत्व के प्रति जागरूक किया गया। इस प्रकार, अनुसंधान शाला ने न केवल स्वच्छता को बढ़ावा दिया, बल्कि सतत विकास और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को भी मजबूत किया। इस अभियान ने यह संदेश दिया कि हर व्यक्ति का योगदान पर्यावरणीय संरक्षण में महत्वपूर्ण है और यह हमें एक हरित और स्थिर भविष्य की दिशा में मार्गदर्शन करता है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य CWPRS परिसर को स्वच्छ और व्यवस्थित बनाना था, जिससे न केवल कार्यक्षेत्र की कार्यकुशलता में वृद्धि हो, बल्कि कर्मचारियों और उपस्थित व्यक्तियों के लिए एक स्वस्थ वातावरण भी सुनिश्चित किया जा सके। परिसर स्वच्छता अभियान के तहत कर्मचारियों ने टीम बनाकर पूरे परिसर की सफाई की, जिसमें कचरे की सफाई, पौधों की देखभाल और गंदगी को हटाने के साथ-साथ परिसर को सुंदर और स्वच्छ बनाए रखने के लिए विभिन्न कार्य किए गए। यह पहल एक ऐसे कामकाजी माहौल को बढ़ावा देती है, जहां सफाई और व्यवस्था कर्मचारियों की मानसिकता और कार्यक्षमता को बेहतर बनाती है। स्वच्छ और सुरक्षित कार्यक्षेत्र से कर्मचारियों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जो उनकी उत्पादकता और समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है। इस प्रकार, अनुसंधान शाला ने विशेष अभियान 4.0 के तहत स्वच्छता के महत्व को बढ़ावा दिया और यह संदेश दिया कि स्वच्छता न केवल शारीरिक स्वास्थ्य, बल्कि कार्यस्थल की समग्र कार्यकुशलता और समृद्धि के लिए भी आवश्यक है।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों द्वारा ICOLD204 सम्मेलन में क्रांतिकारी अनुसंधान की प्रस्तुति

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों ने ICOLD204 सम्मेलन में जलाशय सुरक्षा और स्थिरता से संबंधित महत्वपूर्ण अनुसंधान प्रस्तुत किए। इनमें शॉटक्रेट मिक्स डिज़ाइन, रिसाव नियंत्रण के लिए नवाचारी ग्रेटिंग तकनीक, और स्पिलवे और टेलरेस सुरंगों के उन्नत विश्लेषण शामिल थे। इन प्रस्तुतियों ने अनुसंधान शाला के योगदान को उजागर किया, विशेष रूप से भारत में बांध सुरक्षा और सतत विकास के क्षेत्र में। वैज्ञानिकों ने यह दिखाया कि इन तकनीकों और विश्लेषणों से बांधों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने में कैसे मदद मिलती है और कैसे ये समाधान जल संसाधनों के प्रबंधन को और अधिक प्रभावी और सुरक्षित बना सकते हैं।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला में नौसेना सैनिक छात्रों का दौरा

4 अक्टूबर 2024 को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (NDA) के 44 नौसेना छात्रों ने केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान उन्हें कई महत्वपूर्ण जलीय प्रतिमान के बारे में जानकारी दी गई, जिनमें कवार और किरु स्पिलवे, रैंडम वेव फ्लूम्स और कमराजर व मुंबई के पोर्ट प्रतिमान शामिल थे। इस दौरे ने नौसेना संचालन और तटीय प्रबंधन में जलीय इंजीनियरिंग की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया। छात्रों ने इन प्रतिमान के माध्यम से यह समझा कि जलीय समुद्री संचालन तटीय क्षेत्रों की सुरक्षा व प्रबंधन के लिए कैसे आवश्यक है। अनुसंधान शाला द्वारा प्रदर्शित इन प्रतिमान ने उन्हें जलविज्ञान और तटीय संरचनाओं के डिजाइन तथा प्रबंधन में इस्तेमाल होने वाली उन्नत तकनीकों के बारे में गहरी जानकारी प्रदान की।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला वैज्ञानिकों और एमएमबी अधिकारियों का मंडवा RO-RO टर्मिनल दौरा

7 अक्टूबर 2024 को केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों की टीम, जिसका नेतृत्व डॉ. प्रभात चंद्रा, अपर निदेशक ने किया, ने मंडवा RO-RO टर्मिनल का दौरा किया। इस दौरे के दौरान, अनुसंधान शाला टीम और मुंबई मरीन बोर्ड (MMB) अधिकारियों ने टर्मिनल की कार्यक्षमता और संचालन को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण सिफारिशें दीं। प्रमुख सिफारिशों में ब्रेकवॉटर (समुद्र तट सुरक्षा संरचना) को बढ़ाना और एप्रोच चैनल का पुन: संरेखण शामिल था। इन उपायों का उद्देश्य टर्मिनल की क्षमता बढ़ाना और संचालन में सुधार करना था, ताकि इसे समुद्र की हलचल और अन्य प्राकृतिक प्रभावों से अधिक सुरक्षित और कुशल बनाया जा सके। अनुसंधान शाला द्वारा दी गई सिफारिशें तटीय संरचनाओं के सुधार के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकती हैं, जिससे इस टर्मिनल की प्रभावशीलता में सुधार होगा।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला में "संख्यात्मक सिमुलेशन प्रयोगशाला" का उद्घाटन

8 अक्टूबर 2024 को अनुसंधान शाला के निदेशक ने नए "संख्यात्मक सिमुलेशन प्रयोगशाला" का उद्घाटन किया। यह नई सुविधा वैज्ञानिकों को तटीय, जल संसाधन और जलीय संरचनाओं के अनुसंधान के लिए विभिन्न संख्यात्मक प्रतिरूपण साधन का केंद्रीकृत उपयोग प्रदान करती है। इस प्रयोगशाला के माध्यम से वैज्ञानिक अपने अनुसंधान को और अधिक उन्नत बना सकेंगे, जिससे वे जलीय चुनौतियों को बेहतर तरीके से समझने और उनका समाधान करने में सक्षम होंगे। यह प्रयोगशाला वैज्ञानिकों को विभिन्न प्रकार के जलविज्ञान और जलीय मॉडलिंग उपकरणों तक आसान पहुंच प्रदान करेगा, जो तटीय संरचनाओं, जल संसाधन प्रबंधन और जल प्रवाह की जटिलताओं को सुलझाने में सहायक होंगे। इस पहल से अनुसंधान शाला के अनुसंधान प्रयासों को और गति मिलेगी, जिससे देश के जल संसाधन और तटीय संरचनाओं की सुरक्षा और प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला का जल संरक्षण पर जन जागरूकता अभियान

8 अक्टूबर 2024 को केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने पुणे के गोरे बु. स्थित ZP स्कूल में एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को जल संरक्षण के महत्व से अवगत कराना था। छात्रों ने जल संरक्षण से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया, जिनमें नाटक, कला प्रदर्शन और एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता शामिल थी। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों ने जल बचाने के उपायों और इसके महत्व को रचनात्मक तरीके से समझा। कार्यक्रम का समापन "एक पेड़ मा के नाम अभियान"(#Plant4Mother) के तहत पौधारोपण के साथ हुआ। इस पहल के द्वारा छात्रों में पर्यावरणीय जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न किया गया और उन्हें यह सिखाया गया कि एक पेड़ लगाकर हम पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अनुसंधान शाला के इस प्रयास ने युवाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उन्हें स्थिरता की दिशा में प्रेरित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

" क्लाइमेट हैजार्ड्स और क्लाइमेट रेजिलियंट कोस्टल स्ट्रक्चर्स " कार्यशाला का उद्घाटन

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के निदेशक, डॉ. आर. एस. काँकरा ने 2 दिवसीय कार्यशाला "क्लाइमेट हैजार्ड्स और क्लाइमेट रेजिलियंट कोस्टल स्ट्रक्चर्स" का उद्घाटन किया, जो समुद्र तटीय संरचनाओं की मजबूती और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के उपायों पर चर्चा करने के लिए विशेषज्ञों को एक मंच पर लाया। इस कार्यशाला का आयोजन अनुसंधान शाला ने IIT मद्रास, IAHR, और ग्लोबल वाटर & क्लाइमेट एडॉप्टेशन सेंटर के सहयोग से किया था। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य तटीय संरचनाओं के लिए जलवायु के प्रभावों से निपटने की रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करना था। कार्यशाला के एक प्रमुख आकर्षण के रूप में "समुद्री जलगति विज्ञान – प्रवाह संरचना इंटरैक्शन" पुस्तक का विमोचन हुआ, जो तटीय गतिशीलता को समझने और बेहतर संरचना योजना को समर्थन देने का प्रयास करती है।

अपने उद्घाटन संबोधन में, डॉ. काँकरा ने वैज्ञानिक अनुसंधान को व्यावहारिक और कार्यशील समाधान में परिवर्तित करने के महत्व को रेखांकित किया, खासकर भारत की अद्वितीय तटीय संवेदनशीलता के संदर्भ में। कार्यशाला में विशेषज्ञों द्वारा कई महत्वपूर्ण प्रस्तुतियाँ दी गईं, जैसे कि प्रोफेसर H. Schuttrumpf (RWTH Aachen), प्रोफेसर वी. सुन्दर और प्रोफेसर ए. सन्नासिराज (आई.आई.टी. मद्रास) और अनुसंधान शाला के वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने भी अपने अनुभव साझा किए। पहले दिन का समापन एक पैनल चर्चा के साथ हुआ, जिसमें तटीय संरचनाओं की मजबूती और सहयोग, नवाचार डिजाइन और साझा अनुभवों के माध्यम से सुधार के उपायों पर महत्वपूर्ण चर्चा की गई।

मर्गुनी बैराज बाँध स्थल का निरीक्षण और गणितीय प्रतिमान अध्ययन

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिक श्री कुलदीप मलिक व अन्य अधिकारियों के साथ मर्गुनी बैराज बाँध स्थल पर गए। इस निरीक्षण में L&T और झारखंड सरकार के अधिकारियों का भी साथ था। टीम ने बैराज बाँध की निर्माण प्रक्रिया और उसके जल के प्रवाह पर प्रभाव, विशेष रूप से ऊपर और नीचे के जल स्तर की स्थितियों का मूल्यांकन किया। मर्गुनी बैराज बाँध झारखंड के दुमका जिले में स्थित मसालिया रानीश्वर मेगा लिफ्ट सिंचाई योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका सिंचाई और जल प्रबंधन की क्षमता को बढ़ाने के लिए सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जा रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बैराज बाँध की संरचना प्रभावी रूप से जल वितरण में सुधार करे और क्षेत्र में जल संसाधनों का स्थायी समाधान प्रदान करे। इन गणितीय प्रतिमान अध्ययनों के परिणाम जल प्रबंधन और सिंचाई में सुधार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला वैज्ञानिकों द्वारा मणुगुरु जल संयंत्र और सितममसागर बैराज बाँध का निरीक्षण

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों ने 23-24 अक्टूबर 2024 को मणुगुरु स्थित हैवी वॉटर प्लांट और गोदावरी नदी पर स्थित सितममसागर बैराज बाँध का दौरा किया। इस दौरे का उद्देश्य बैराज बाँध के जलवायु और जल संरचनाओं पर प्रभाव का गहराई से मूल्यांकन करना था, ताकि आवश्यक जलविज्ञान संबंधी अध्ययन की दिशा तय की जा सके। इस दौरान हैवी वॉटर प्लांट (HWPM) और तेलंगाना के सिंचाई और जल संसाधन विभाग (I&CAD) के अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण चर्चाएं हुई, जिनसे बैराज बाँध और जलप्रवाह के प्रभावों पर महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। इन चर्चाओं ने अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों को जल प्रबंधन के लिए उन्नत जलगतिक अध्ययनों के दायरे को अंतिम रूप देने में मदद की। इस अध्ययन और संवाद के माध्यम से अनुसंधान शाला ने जल संसाधन प्रबंधन और टिकाऊ जल नीति में अपनी विशेषज्ञता और नेतृत्व को प्रदर्शित किया। यह पहल जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समझने और भविष्य में जल संरचनाओं को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" का आयोजन

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने 28 अक्टूबर से 3 नवंबर 2024 तक "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" मनाया। सप्ताह की शुरुआत एक शपथ ग्रहण समारोह से हुई, जिसमें सभी कर्मचारियों ने भ्रष्टाचार के खिलाफ और सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए शपथ ली। सप्ताह भर कर्मचारियों ने **"सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि"** थीम पर आधारित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया, जिनमें निबंध लेखन, स्लोगन लेखन और वक्तृत्व शामिल थे। इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य कर्मचारियों में सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। सप्ताह का समापन 5 नवंबर 2024 को डॉ. आर. एस. काँकरा, निदेशक द्वारा विजेताओं को सम्मानित करने के साथ हुआ। यह कार्यक्रम अनुसंधान शाला की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जो न केवल जल संसाधन प्रबंधन में बल्कि समाज में ईमानदारी और पारदर्शिता के सिद्धांतों को भी प्रोत्साहित करता है।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला "सी.आई.आई. अवार्ड फॉर एक्सीलेंस इन वूमन इन STEM 2024" से सम्मानित

CII
Confederation of Indian Industry
CII Awards on Excellence for Women in STEM

CII Awards on Excellence for Women in STEM
This is to certify that
Central Water & Power Research Station (CWPRS)
is recognised as one of the top institutions excelling in Women in STEM
2024

Dr. Ashish Mohan
Ms. Vaishali Nigam Sinha
Chairperson

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला को 2024 में "सी आई आई (CII) अवार्ड फॉर एक्सीलेंस इन वूमन इन STEM" पुरस्कार मिला। यह सम्मान अनुसंधान शाला को "टॉप 10 अकादमिक और R&D संस्थान" श्रेणी में प्रदान किया गया, जो संस्थान की महिलाओं के प्रति समर्पण और विविधता एवं समावेशन के लिए किए गए प्रयासों को मान्यता देता है। अनुसंधान शाला में महिला शोधकर्ताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिन्होंने जल क्षेत्र में नई दिशा देने के साथ-साथ संगठन की सफलता में अहम भूमिका निभाई है। इस सम्मान के माध्यम से अनुसंधान शाला की महिलाओं के प्रति सम्मान और उनके योगदान को स्वीकारा गया है। इस पुरस्कार के साथ, अनुसंधान शाला की समर्पित महिला शोधकर्ताओं को सलाम किया गया है, जिनकी मेहनत और प्रतिबद्धता ने संगठन को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया है। इसके साथ ही, इस पुरस्कार से अनुसंधान शाला की समावेशी उत्कृष्टता की दिशा में किए गए प्रयासों को भी सराहा गया है। संस्थान ने हमेशा अनुसंधान के माध्यम से सेवा देने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और जल क्षेत्र में विकास को बढ़ावा देने के लिए अपने निरंतर प्रयासों को दर्शाया है।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा टुर्गा ऊर्जा संग्रहण परियोजना के लिए जलीय प्रतिमान अध्ययन पर उच्च-स्तरीय बैठक

22 नवम्बर 2024 को, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के निदेशक ने पश्चिम बंगाल के 1000 मेगावाट टुर्गा ऊर्जा संग्रहण परियोजना के लिए अनुसंधान शाला द्वारा किए जाने वाले जलीय प्रतिमान अध्ययन पर चर्चा करने के लिए WAPCOS लिमिटेड, WBSEDCL और जापान की JPOWER के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक उच्च-स्तरीय बैठक की। इस प्रतिनिधिमंडल में श्री अमिताभ त्रिपाठी (वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक, WAPCOS), श्री पी.एस. मुखोपाध्याय (मुख्य अभियंता, WBSEDCL), और श्री युटारो मिजुहाशी (डिज़ाइन इंजीनियर, JPOWER) शामिल थे। इन अधिकारियों ने अनुसंधान शाला के उन्नत जलीय प्रतिमान का दौरा भी किया, जो स्पिलवे, ऊर्जा नष्ट करने वाले और अन्य महत्वपूर्ण संरचनाओं के लिए बनाए गए हैं। यह दौरा अनुसंधान शाला की अत्याधुनिक अनुसंधान क्षमताओं और देश में लागत-कुशल और सतत जलीय उर्जा संरचना के विकास में इसके महत्वपूर्ण योगदान को उजागर करता है। अनुसंधान शाला भारत की ऊर्जा परिवर्तन प्रक्रिया का समर्थन करने के लिए नवोन्मेषी और प्रभावशाली समाधान प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा "जल संसाधन प्रबंधन और संरक्षण – STEM में महिलाएं" विषय पर कार्यशाला

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के निदेशक ने "जल संसाधन प्रबंधन और संरक्षण – STEM में महिलाएं" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का

उद्घाटन किया। उद्घाटन सत्र में निदेशक ने STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाने के महत्व पर जोर दिया और उनके नवाचार करने की क्षमता और स्थिर जल संसाधन प्रबंधन के समाधान में उनकी भूमिका को रेखांकित किया। इस आयोजन में प्रमुख विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिए गए, जिनमें डॉ. कंचन खरे, वरिष्ठ जल सलाहकार, सेवर्धिनी, डॉ. मेधा देशपांडे, वैज्ञानिक E, IITM, और डॉ. सायली आपटे, सहायक प्रोफेसर, सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी शामिल थीं। इन विशेषज्ञों ने महिलाओं की स्थिर जल प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। 50 से अधिक प्रतिभागियों के साथ आयोजित इस कार्यशाला में अकादमिक, उद्योग और अनुसंधान शाला के पेशेवरों ने भाग लिया। यह कार्यशाला अनुसंधान शाला की तकनीकी उत्कृष्टता और राष्ट्रीय जल क्षेत्र के विकास में इसके योगदान को प्रदर्शित करती है। साथ ही, यह आयोजन महिलाओं को STEM क्षेत्रों में नवाचार करने और नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाने की आवश्यकता पर बल देता है।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा HYDRO 2024 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन पर संबोधन

13 दिसंबर 2024 को, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के निदेशक डॉ. आर. एस. कॉंकरा ने मीडिया से बातचीत करते हुए आगामी HYDRO 2024 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। यह सम्मेलन 18-20 दिसंबर 2024 तक केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे में आयोजित किया जाएगा। निदेशक ने भारत के जल संसाधन चुनौतियों के समाधान में अनुसंधान शाला की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और स्थायी समाधान, अत्याधुनिक जलीय अभियांत्रिकी और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए रणनीतियों की आवश्यकता को बताया। उन्होंने अनुसंधान शाला की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML) जैसी नई तकनीकों में की गई प्रगति का उल्लेख किया और डेम सुरक्षा के लिए एक उत्कृष्टता केंद्र की योजना का ऐलान किया, जो राष्ट्रीय संरचना की मजबूती को और बढ़ाएगा। सम्मेलन के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक अद्वितीय मंच होगा, जहां विशेषज्ञ, नीति निर्माता और अन्य हितधारक एकत्र होंगे और जल, ऊर्जा, और तटीय क्षेत्रों में नवाचार और व्यवहारिक समाधान पर चर्चा करेंगे। डॉ. प्रभात चंद्रा, अतिरिक्त निदेशक ने सम्मेलन के पैमाने के बारे में विस्तार से बताया, जिसमें 320+ शोध पत्र, 480+ प्रतिभागी, युवा शोधकर्ताओं के लिए एक विशेष हाइड्रो है। इसमें, अत्याधुनिक तकनीकों की एक प्रदर्शनी शामिल होगी, निदेशक ने अपने भाषण का समापन करते हुए कहा कि HYDRO 2024 सिर्फ एक सम्मेलन नहीं है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण कदम है, जो जल संसाधन प्रबंधन को स्थायी भविष्य के लिए रूपांतरित करने की दिशा में उठाया गया है।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे में HYDRO 2024 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन

18 दिसंबर 2024 को, HYDRO 2024 इस तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे में हुआ, जो जल संसाधन और जलीय इंजीनियरिंग के क्षेत्र में एक नए अध्याय की शुरुआत का प्रतीक है। यह सम्मेलन जल संसाधनों के प्रबंधन, संरक्षण और जलीय इंजीनियरिंग में नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। उद्घाटन सत्र की शुरुआत प्रेरणादायक संदेशों और प्रभावशाली भाषणों से हुई, जो सम्मेलन की दिशा और उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं।

उद्घाटन सत्र में श्री सी. आर. पाटिल, माननीय मंत्री, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय ने वीडियो संदेश के माध्यम से अपने आशीर्वचन भेजे, जिसमें जल क्षेत्र में सुधार के लिए सरकार के प्रयासों पर प्रकाश डाला गया। इसके बाद, सुश्री देबाश्री मुखर्जी, सचिव DoWR, RD & GR ने एक लिखित संदेश में जल क्षेत्र में नवाचार और स्थिरता पर जोर दिया, जो जल संसाधनों के दीर्घकालिक प्रबंधन के लिए जरूरी है। डॉ. आर. एस. काँकरा, निदेशक, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने अनुसंधान शाला की शताब्दी-पुरानी विरासत और इसके जल संसाधन प्रबंधन में नवाचार और नेतृत्व की विशेषताओं को सम्मानित किया। मुख्य अतिथि डॉ. म. रविचंद्रन, सचिव, पर्यावरण अध्ययन मंत्रालय ने उद्घाटन भाषण में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर अनुसंधान, तकनीकी नवाचार और नीति एकीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। उनका कहना था कि ये कदम जल संसाधनों के स्थिर भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं।

उद्घाटन समारोह के मुख्य आकर्षण में अनुसंधान शाला की नई वेबसाइट को लॉन्च किया गया, जो इसके शोध कार्य और योगदान को विश्व स्तर पर प्रदर्शित करेगा। HYDRO 2024 सॉवेनियर और केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की 100+ वर्षों की उत्कृष्टता को समर्पित कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया गया, जो संस्थान के इतिहास और योगदान को रेखांकित करता है। साथ ही, अनुसंधान शाला के इतिहास और विशेषज्ञता को प्रदर्शित करने वाला ब्रॉशर भी जारी किया गया। स्पिलवे और ऊर्जा नष्ट करने वाले डिजाइन और तटीय संरचनाओं के डिजाइन पर आधारित तकनीकी पत्रिका का विमोचन भी किया गया, जो इस क्षेत्र में चल रहे महत्वपूर्ण अनुसंधान को दर्शाता है।

सम्मेलन के दौरान, डॉ. चंद्रशेखर अय्यर, पूर्व केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला अध्यक्ष और प्रो. एच. एल. तिवारी, उपाध्यक्ष, ISH ने विशेष संबोधन दिए। उद्घाटन के समय मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने अनुसंधान शाला की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, जिसमें भौतिक प्रतिमान और प्रयोगशाला को देखा गया, जो जलीय और तटीय इंजीनियरिंग में अनुसंधान शाला की विशेषज्ञता को प्रदर्शित करते हैं। आगामी तीन दिनों में, 330 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए, जो जल संसाधन प्रबंधन और जलीय इंजीनियरिंग से संबंधित नए विचारों और समाधानों पर केंद्रित थे। इस सम्मेलन द्वारा वैश्विक विशेषज्ञ, शोधकर्ता और नीति निर्माता आदि ने अपने विचारों का आदान-प्रदान किया और जल संसाधन प्रबंधन और जलीय चुनौतियों के लिए स्थिर और नवोन्मेषी समाधानों की दिशा में काम करने के लिए दिशानिर्देश दिए। HYDRO 2024 सम्मेलन ने जल संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग और समृद्ध विचार-विमर्श की संभावनाओं को खोल दिया है।इस सम्मेलन का उद्देश्य जल संसाधनों के प्रबंधन और संरक्षण के क्षेत्र में समृद्ध विचार, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना था, ताकि भविष्य में जल संकटों का समाधान किया जा सके और तटीय क्षेत्रों को बेहतर तरीके से संरक्षित किया जा सके।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की गतिविधियों और उपलब्धियों की मुख्य

1. Boora Krishna, B. S. Sundarlal, “Assessment of reservoir sedimentation using satellite remote sensing technique and its effect on demand of water supply” published in “CBIP’s Water and Energy International Journal” in September 2024.

2. R. Vigneswaran, Sunil J. Pillai, K. Balachandran, Jai Prakash Meena, Rizwan Ali, “Using Scientific Method for Analysing and Designing Suitable Grout System for Seepage Reduction in Warna Dam, Maharashtra” published in 92nd ICOLD Annual Meeting & International Symposium on "Dams for People, Water, Environment and Development" organized by International Commission of Large Dams (ICOLD) and hosted by Indian National Committee on Large Dams (INCOLD) from 29th September to 03rd October, 2024 at New Delhi. CWPRS Information Bulletin October 2024.

3. Sunil J. Pillai, Sarbjeet Singh, , K. Balachandran, Ankit Sahu, Rizwan Ali, “Systematic, Sequential and Integrated Approach for Arresting Seepage by Cementitious Grouting of Masonry Gravity DamsCWPRS Experience” published in 92nd ICOLD Annual Meeting & International Symposium on "Dams for People, Water, Environment and Development" organized by International Commission of Large Dams (ICOLD) and hosted by Indian National Committee on Large Dams (INCOLD) from 29th September to 03rd October, 2024 at New Delhi.

4. Sarbjeet Singh, , R. Vigneswaran, Jai Prakash Meena, Ankit Sahu, Rizwan Ali, “Methodical and Incorporated Testing Procedure for Design of Shotcrete Mix Design for Lessening the Seepage in Masonry Gravity Dams- Case Study” published in 92nd ICOLD Annual Meeting & International Symposium on "Dams for People, Water, Environment and Development" organized by International Commission of Large Dams (ICOLD) and hosted by Indian National Committee on Large Dams (INCOLD) from 29th September to 03rd October, 2024 at New Delhi.

5. Tanusree Samanta, J. S. Edlabadkar, Rizwan Ali, R. S. Kankara, “Geotechnical safety aspects of tailing dams and ash bunds: Significance, Overview and Experience” published in 92nd ICOLD Annual Meeting & International Symposium on "Dams for People, Water, Environment and Development" being organized by International Commission of Large Dams (ICOLD) and hosted by Indian National Committee on Large Dams (INCOLD) from 29th September to 03rd October, 2024 at New Delhi.

6. Sushma Vyas, M. K. Verma, R. G. Patil, “Transient Stability Analysis of Tailrace Tunnels and Tailrace Surge Chambers of Hydropower Plants using Physical Model” published in 92nd ICOLD Annual Meeting & International Symposium on "Dams for People, Water, Environment and Development" being organized by International Commission of Large Dams (ICOLD) and hosted by Indian National Committee on Large Dams (INCOLD) from 29th September to 03rd October, 2024 at New Delhi.

7. Sushma Vyas, Sumedha Kulkarni, M. K. Verma, R. G. Patil, “Numerical Analysis for Orifice Spillway With and Without Super Elevation” published in 92nd ICOLD Annual Meeting & International Symposium on "Dams for People, Water, Environment and Development" organized by International Commission of Large Dams (ICOLD) and hosted by Indian National Committee on Large Dams (INCOLD) from 29th September to 03rd October, 2024 at New Delhi.

8. Vaishali Gadhe, S. R. Patnaik, R. R. Bhate, “The physical and numerical modeling to design the breast wall spillway- A case study” published in “ISH Journal of Hydraulic Engineering” on 10th October 2024.

- Physical Hydraulic model studies to assess the feasibility of floating pontoon & Jetty at Rajbunder, Elephanta Island, Mumbai for Maharashtra Maritime Board
- Mathematical Model studies to assess the wave conditions at the proposed floating pontoon and estimation of likely rate of siltation for jetty at Rajbunder, Elephanta Island, Mumbai
- Field data collection and analysis for the mathematical model studies for the proposed development at Paradip Port, Odisha
- Revival of dam instrumentation of Sukhi dam, Gujarat: Twin Tube Piezometers
- Mathematical model studies for surge analysis of Wambori Chari Lift Irrigation Scheme Stage-II, Ahmednagar, Maharashtra
- Selection, Supervision, Calibration, Testing & assistance in installation of automatic flow monitoring device in Sardar Sarovar Project (SSP)
- Site visit to Bhadra Dam under KNNL, towards inspection of the dam and discussions for undertaking studies for controlling seepage through the body of Bhadra dam, Karnataka
- Mathematical model studies for littoral drift shoreline change due to proposed development of Multipurpose Harbour at Byndur, Karnataka
- Hydraulic Model Studies for revision of gate operation schedule of Farakka Barrage, West Bengal
- Assessment of in-situ quality of rockmass around the Power House by NDT methods at Panshet HEP, Maharashtra
- Desk and mathematical studies for hydraulic re-assessment of new railway line section between Araria and Galgalia for NEFR, Bihar.
- Physical Hydraulic model studies to assess the feasibility of floating pontoon & Jetty at Rajbunder, Elephanta Island, Mumbai for Maharashtra Maritime Board
- Mathematical Model studies to assess the wave conditions at the proposed floating pontoon and estimation of likely rate of siltation for jetty at Rajbunder, Elephanta Island, Mumbai
- Field data collection and analysis for the mathematical model studies for the proposed development at Paradip Port, Odisha
- Revival of dam instrumentation of Sukhi dam, Gujarat: Twin Tube Piezometers
- Mathematical model studies for surge analysis of Wambori Chari Lift Irrigation Scheme Stage-II, Ahmednagar, Maharashtra
- Field data collection and matheamatical model sedimentation at Marve Ro-Ro jetty, Mumbai for Maharashtra Maritime Board
- Desk and wave flume studies for the design of breakwater for the development of multipurpose harbour at Byndur Karnataka
- Desk studies for the design of groyens for bank protection work at Borsi Macchiwad, Navsari, Gujarat
- Desk studies for the design of coastal protection work at Maroli Kalgam and Fansa villages Umargam Taluka Valsad District, Gujarat
- Desk studies for the design of coastal protection work at Fansa (Mangelwad to Bariyawad), Umargam Taluka Valsad District, Gujarat
- Desk and wave flume studies for the design of breakwater for the development of gateway port at Kakinada, East Godavari District, Andhra Pradesh.
- mathematical model studies for surge analysis of Wardha Barrage project lift irrigation schemes-1 and 2, Yavatmal,Maharashtra.
- Hydraulic model studies for left flank head regulator of Polavaram Irrigation Project, Andhra Pradesh, 1:20 scale 2-D sectional model

नई नियुक्तियां

अ. क्र.	नाम	पदनाम	प्रभाग का नाम	तिथि
1	श्री हेमंत सिंह	अनुसंधान सहायक अभि.	एम एम सी ई	21.10.2024
2	श्री श्रीकांत डी. पवार	अनुसंधान सहायक अभि.	सी एम सी	17.10.2024
3	श्री एस वेणुगोपाल	सहायक लेखा अधिकारी	सी पी पी डी	15.10.2024
4	श्रीमती राधिका गुप्ता	प्रयोगशाला सहायक	जी ई - I	18.12.2024
5	श्री अभिषेक पराशर	पुस्तकालय सूचना सहायक	प्रशासन अनुभाग	23.12.2024
6	श्री भालचक्र सुमित	अनुसंधान सहायक	एम एम सी ई	11.12.2024
7	सोबिथा एस.	प्रारूपकार	सी पी पी डी	26.12.2024

सेवा निवृत्तियाँ

अ. क्र.	नाम	पदनाम	प्रभाग का नाम	तिथि
1	श्री राम ए बी कुर्मी	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	सी पी पी डी	30.11.2024
2	श्री जे एम दोधार	प्रयोगशाला *सहायक-I*	जी ई - I	31.12.2024

31 दिसम्बर 2024 को कर्मचारियों की संख्या

अ. क्र.	वर्ग	संख्या
1.	समूह 'क'	152
2.	समूह 'ख' (राजपत्रित)	51
3.	समूह 'ख' (अराजपत्रित)	130
4.	समूह 'ग'	349